शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संस्कृत गद्य काव्य 'शिवराजविजय' में द्वारपाल की प्रासंगिकता

परमानन्द कुमार (शोधार्थी)
संस्कृत विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

शोध संक्षेप

'शिवराजविजय' आधुनिक संस्कृत साहित्य का एक राष्ट्रभक्तिपरक गद्य काव्य है। इसके रचयिता पण्डित अम्बिकादत्तव्यास हैं। 'शिवराजविजय' एक ऐसा गद्य काव्य है जिसमें सभी पात्र अपनी कर्तव्यनिष्ठा और देशभक्ति की भावना से सुशोभित हैं। राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण इस गद्य काव्य में वर्णित द्वारपाल का प्रसंग आज के वर्तमान युग में भी प्रासंगिक है। भारतीय संस्कृति और शास्त्रों में द्वारपाल का महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक भारत में द्वारपालों की स्थिति कैसा होना चाहिए ? इसके लिए हमें शिवाजी की रणनीति से शिक्षा लेनी चाहिए। प्रस्तुत शोध पत्र में शिवराज विजय में द्वारपाल की प्रासंगिकता पर विचार किया गया है।

कूट शब्द - *दुर्ग रूद्राक्ष, तुम्बीपात्र, रसायनतत्त्व, पारद-भस्म, मंजूषा, पुरस्कार, बैकुण्ठ, पापयोनि, आतंकवादी, राजव्यवस्था।*

भूमिका

पंडित अम्बिकादत्तव्यास की 'शिवराजविजय' लोकविख्यात एवं लोकप्रिय गद्य रचना है, जिसे संस्कृत वाङ्मय का प्रथम गद्य काव्य होने का गौरव प्राप्त है। 'शिवराजविजय' का वाक्य-विन्यास अनुपम तथा अलंकारयुक्त रूपशिल्प पाश्चात्य उपन्यासों तथा बंग उपन्यासों से समता रखनेवाला है।

शिवराजविजय का कथानक ऐतिहासिक है। इसमें महाराष्ट्र केसरी वीर शिवाजी के चरित्र का कुशलतापूर्ण चित्रण है। यद्यपि इसमें वर्णित सभी पात्रों का प्रसंग वर्णन योग्य ही है, किन्तु द्वारपाल और संन्यासी के वेश में द्वारपाल के साथ गौर सिंह का वार्तालाप अत्यन्त ही प्रासंगिक है।

यह अंश शिवराजविजय के प्रथम विराम के द्वितीय निःश्वास से संकलित है। इस निःश्वास में सेनापति अफजल खान के द्वारा शिवाजी के साथ युद्ध का वर्णन है, जिसमें शिवाजी के बघनखी हाथों से अफजल खान मारा जाता है।[1] शिवाजी की सेना अफजल खान की सेना पर टूट पड़ती है और क्षणभर में ही अफजल खान की सेना तितर-बितर हो जाती है।[2] इस निःश्वास के प्रथम दृश्य में शिवाजी से मिलने की आकांक्षा लेकर संन्यासी के वेश में गौर सिंह, शिवाजी के पास जाना चाहते हैं। संध्या का समय हो चला था। अपने कन्धे पर बन्दूक रखकर कुशलतापूर्वक इधर-उधर देखते हुए और आगमन-प्रत्यागमन करते हुए प्रताप दुर्ग के द्वारपाल ने किसी के (संन्यासी) पैरों की ध्वनि सी सुनी। तब खड़े होकर सामने देखकर दीपक का प्रकाश होते हुए भी अंधेरेपन के कारण किसी आनेवाले को न देखता हुआ उसने गम्भीर स्वर से कहा- अरे यहाँ यह कौन है ? यह कौन है ? फिर थोड़ी देर बाद

वही पादध्वनि सुनाई दी। तब वह द्वारपाल क्रोधपूर्वक बोला- यह कौन है ? मुझे उत्तर न देता हुआ आ रहा है बहरा

तदनन्तर उस दौवारिक (द्वारपाल) ने बोलने वाले को न देखते हुए द्वारपाल ! शान्त रहो, क्यों बेकार मरने की इच्छा वाला और बहरा कहते हो ? यह गम्भीर स्वर में स्नेहयुक्त वाणी सुनी। इसके पश्चात् 'तो क्या आपको अभी तक महाराज शिवाजी का यह आदेश नहीं ज्ञात है कि पहरेदार के तीन बार पूछने पर भी जो व्यक्ति उत्तर न दे, उसे मार दिया जाय।' द्वारपाल के यह कहते हुए 'क्षमा करो, मैं आ रहा हूँ, आकर समस्त वृत्तान्त बतलाऊँगा' यह कहते हुए बारह वर्ष के किसी भिक्षु बालक से अनुगम्यमान, काषाय वस्त्र धारण किये हुए, तुम्बीपात्र लिये हुए मस्तक पर भस्म लपेटे हुए रूद्राक्ष की माला से विभूषित कण्ठवाले, सुन्दर शरीरधारी किसी संन्यासी को द्वारपाल ने देखा। तब उन दोनों में इस प्रकार वार्तालाप हुआ।

संन्यासी - तुम हम संन्यासियों को भी तीक्ष्ण वचनों द्वारा क्यों तिरस्कृत करते हो ?

दौवारिक - भगवन्! आप संन्यासी हैं, चतुर्थ आश्रम में वर्तमान हैं, अतः मैं आपको प्रणाम करता हूँ, किन्तु आप महाराज की आज्ञा का उल्लंघन कर अपना परिचय दिये बिना ही आ रहे हैं इसलिए हम आप पर कुपित हो रहे हैं।

संन्यासी - ठीक है, अच्छा, तुम्हारा यह अपराध मैंने क्षमा कर दिया, किन्तु आज से संन्यास्यिों, ब्रह्मचारियों, पण्डितों, स्त्रियों और बालकों से कुछ भी मत पूछना। यदि वे अपना परिचय न दें तो भी उन्हें प्रवेश करने देना।

दौवारिक - संन्यासी! संन्यासी! बहुत कह चुके अब रूकिये। हम द्वारपाल लोग विधाता की भी आज्ञा नहीं मानते, किन्तु जो वैदिक धर्म की रक्षा के व्रती हैं, जो संन्यासियों, ब्रह्मचारियों और तपस्वियों के संन्यास, ब्रह्मचर्य और तपस्या के विघ्नों के विनाशक हैं तथा जिनके कारण यह कोंकण देश की भूमि वीरों को जन्म देनेवाली कही जाती है, उन्हीं महाराज वीर शिवाजी की आज्ञा को शिर से धारण करते हैं।

संन्यासी - अच्छा कुछ भी हो, हमें मार्ग बतलाओ। हम वीर शिवाजी के पास जाना चाहते हैं।

दौवारिक - उसकी तो बात भी मत करें। आप जैसे लोगों के मिलने का समय दिवस के पूर्व भाग में महाराज के सन्ध्योपासन के समय होता है रात्रि में नहीं।

संन्यासी - तो क्या रात्रि में कोई भी प्रवेश नहीं करता है ?

दौवारिक - (क्रोध पूर्वक) कोई क्यों नहीं प्रवेश करता है ? परिचित अथवा परिचय प्राप्त किए हुए लोग अथवा आमंत्रित जन प्रवेश करते हैं न कि आप जैसे, जो तुम्बीपात्र लेकर एक द्वार से दूसरे द्वार तक - ऐसा कहते ही मानो संन्यासी के तेज से पराभूत होकर बीच में ही रूक गया।

संन्यासी - (अपने मन में) वीर शिवाजी राजनीति में कुशल हैं। सर्वथा द्वारपाल के योग ही व्यक्ति नियुक्त किया गया है। यद्यपि मैं इसकी परीक्षा ले चुका हूँ तथापि मैं इसकी एक विषय में पुनः परीक्षा लूँगा। (प्रकट रूप में) द्वारपाल। इधर आओ, तुम्हारे कान में कुछ कहूँगा।

दौवारिक - (वैसा करके) कहिये।

संन्यासी - देखो, इस समय तुम द्वारपाल पद पर नियुक्त हो, प्राणों की परवाह न कर जीवन निर्वाहार्थ धन प्राप्त करते हो। तुम कभी हजार या दस हजार रुपये एक साथ प्राप्त कर लोगे, यह किसी भी तरह सम्भव नहीं है।

दौवारिक - हाँ, आगे कहिए।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संन्यासी - हम संन्यासी लोग वनों और पर्वत की गुफाओं में विचरण करते हैं और समस्त रसायनतत्त्वों को जानते हैं।

दौवारिक - हो सकता है, आगे कहिये।

संन्यासी - यदि तुम मुझको अन्दर प्रवेश करने से न रोको, तो इसी समय मैं तुम्हें संशोधित पारद भस्म दे दूँ। जिससे तुम रत्तीभर से ही मनों ताँबे को सोना बनाने में सक्षम हो सकोगे।

दौवारिक - (तिरस्कार पूर्वक) अरे! क्यों तुम विश्वासघात और स्वामी की प्रवंचना का उपदेश दे रहे हो ? वे कोई और ही दोगले होते हैं, जो घूस के लोभ से स्वामी को छलकर अपने को घोर नरक में गिराते हैं। हम सब महाराज शिवाजी के सेवक ऐसे नहीं हैं। (संन्यासी का हाथ पकड़कर) इधर आओ, सत्य-सत्य बतलाओ कि तुम कौन हो ? कहाँ से आये हो ? या तुम्हें किसने भेजा है ?

संन्यासी - (कुछ मुस्कुराकर) अच्छा, तुम मुझे कौन समझते हो ?

दौवारिक - मैं तो तुम्हें इसी सेना के साथ आये हुए अफजल खाँ का..

संन्यासी - (बीच में ही रोककर) धिक्कार है, धिक्कार है।

दौवारिक - अथवा किसी दूसरे का गुप्तचर समझता हूँ। अतः मैं अपने स्वामी के आदेश का पालन करूँगा। (हाथ खींचकर) इधर आओ, दुर्गाध्यक्ष के पास चलो। वह तुम्हें पहचानकर तुम्हारे साथ यथोचित व्यवहार करेंगे। उसके बाद संन्यासी ने कहा- मुझे छोड़ दीजिए, मैं फिर नहीं आऊँगा, पुनः ऐसी बात नहीं कहूँगा। आप विशाल हृदय वाले हैं, दया कीजिए, दया कीजिए। ऐसे हजारों बार कहा, परन्तु द्वारपाल पुनः उसे खींच ही ले चला।

तदनन्तर द्वारपाल के द्वार पर स्थित खम्भे के उपर रखी हुई काँच की मंजूषा में प्रज्वलित हो रहे तीव्र प्रकाश वाले दीपक के समीप पहुँचने पर संन्यासी ने कहा- द्वारपाल! क्या मुझे तुमने कभी पहले भी देखा है ? तब द्वारपाल पुनः उस संन्यासी को अच्छी प्रकार देखकर उनके गम्भीर स्वर से, रक्त नेत्र प्रान्तवाले लोचनों से, अत्यन्त गौरव से, सद्यः सम्प्राप्त नूतन युवावस्था से, निर्भीक एवं मनोहर मुखमण्डल से उन्हें पहचान लिया। बन्दूक के समुत्तोलन से पड़े हुए घट्ठों से कठोर संन्यासी के हाथ को छोड़कर लज्जित हुए के समान, विनीत होकर प्रणाम करते हुए बोला- अरे! क्या आप श्रीमान् गौरसिंह जी आर्य हैं ? इस बेचारे गँवार के अनुचित व्यवहार को क्षमा कीजिएगा।

यह सुनकर द्वारपाल के पीठ पर हाथ फेरते हुए संन्यासी वेशधारी गौरसिंह ने कहा- दौवारिक! मैंने तुम्हारी कई बार परीक्षा ली है, मैं तुम्हें समझ गया। तुम यथोचित पद पर ही नियुक्त किये गये हो। तुम्हारे सदृश लोग ही स्वामियों के पुरस्कार के पात्र होते हैं और इहलोक-परलोक दोनों को जीतते हैं। तुम्हारी प्रामाणिकता को तो पूज्य शिवाजी जानते ही हैं, तथापि मैं भी उनसे विशेष रूप से कहूँगा। बतलाओ, महाराज कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं ?[3]

इस प्रकार भली-भांति जान लेने के बाद द्वारपाल उन्हें आदरपूर्वक शिवाजी के पास ले जाता है। इस प्रसंग से यह प्रतीत होता है कि शिवाजी के समय द्वारपाल किस प्रकार के कर्तव्यनिष्ठ हुआ करते थे। सनातन हिन्दू धर्म में द्वारपाल की प्रासंगिकता हजारों वर्ष पहले से है। पुराणों में देवी-देवताओं के द्वारपाल भी कर्तव्यनिष्ठ और धर्मपरायण हुआ करते थे। विष्णु के दो द्वारपाल थे- जय और विजय। अपने कर्तव्यनिष्ठता के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कारण जय-विजय को तीन जन्मों का शाप मिला था। बैकुण्ठ में सनक, सनन्दन और सनातन विष्णुजी से मिलने के प्रसंग में जय-विजय के द्वारा तीनों ऋषियों को द्वार पर ही रोका गया जिससे तीनों ऋषि क्रुद्ध होकर 'भूलोक' में तीन जन्म तक पापयोनि में जाओगे ऐसा शाप दिया। फिर दोनों जय और विजय पहले जन्म में हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप बने। दूसरे जन्म में रावण और कुम्भकर्ण बने और तीसरे में शिशुपाल और दन्तवक्र बने।[4]

भगवान शिव के द्वारपाल नन्दी माने जाते हैं, तथापि इसके अलावा स्कन्द, रिटी, वृषभ, भृंगी, गणेश, उमा-महेश्वर और महाकाल को भी उनके द्वारों का रक्षक माना गया है। भगवान् श्रीराम के द्वारपाल हनुमान् जी थे यही बात हनुमान् चालीसा में दिखाई पड़ता है-

राम द्वारे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पेसारे।।[5]

इसी प्रकार श्रीकृष्ण के द्वारपाल भी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहण भलीभांति करते हैं जब सुदामा श्रीकृष्ण से मिलने आते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार से राज्य संचालन में द्वारपाल की भूमिका स्वयं सिद्ध है। किसी भी राष्ट्र की बाहरी आक्रमण से बचाने की पहली जिम्मेदारी द्वारपाल की होती है। इतिहिस में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें द्वारपाल की लापरवाही का परिणाम देश को सहना पडा। शिवविजय का यह प्रसंग सुरक्षा व्यवस्था को चाक-चौबंद करने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. ग्रेट मैन ऑफ़ इंडिया, चार्ल्स किनसिड, पृ॰ 193
2. हिस्ट्री ऑफ़ दी मराठाज, ग्राण्ट डफ, पृ॰ 78
3. मिश्र, डॉ. रमाशङ्कर, शिवराजविजय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण-2008, पृ॰ 111 से 129 तक
4. http://m_hindi.webdunia.com/sanatan
5. तुलसीदासकृत हनुमान्चालीसा - 11वाँ छन्द